1964CDigambar Jain Saraswati Bhavan

Digambar Jain Saraswati Bhavan in Sanmati Sandesh July 1964

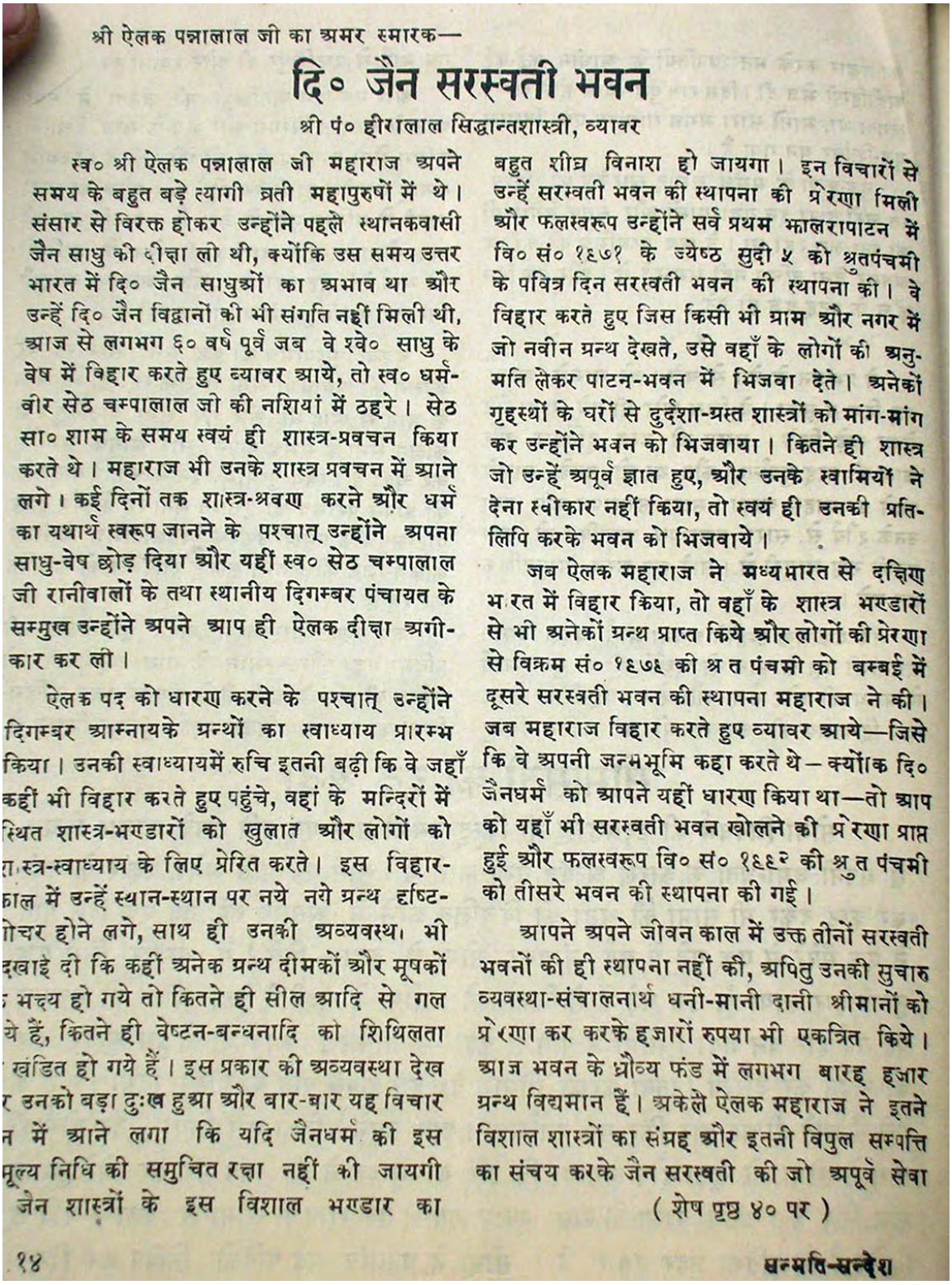

श्री ऐलक पन्नालाल जी का अमर स्मारक—

दि० जैन सरस्वती भवन

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री, ब्यावर

स्व० श्री ऐलक पन्नालाल जी महाराज अपने समय के बहुत बड़े त्यागी व्रती महापुरुषों में थे। संसार से विरक्त होकर उन्होंने पहले स्थानकवासी जैन साधु की दीक्षा ली थी, क्योंकि उस समय उत्तर भारत में दि० जैन साधुओं का अभाव था और उन्हें दि० जैन विद्वानों की भी संगति नहीं मिली थी, आज से लगभग ६० वर्ष पूर्व जब वे श्वे० साधु के वेष में विहार करते हुए ब्यावर आये, तो स्व० धर्मवीर सेठ चम्पालाल जी की नशियां में ठहरे। सेठ सा० शाम के समय स्वयं ही शास्त्र-प्रवचन किया करते थे। महाराज भी उनके शास्त्र प्रवचन में आने लगे। कई दिनों तक शास्त्र-श्रवण करने और धर्म का यथार्थ स्वरूप जानने के पश्चात् उन्होंने अपना साधु-वेष छोड़ दिया और यहीं स्व० सेठ चम्पालाल जी रानीवालों के तथा स्थानीय दिगम्बर पंचायत के सम्मुख उन्होंने अपने आप ही ऐलक दीक्षा अगीकार कर ली।

ऐलक पद को धारण करने के पश्चात् उन्होंने दिगम्बर आम्नायके ग्रन्थों का स्वाध्याय प्रारम्भ किया। उनकी स्वाध्यायमें रुचि इतनी बढ़ी कि वे जहाँ कहीं भी विहार करते हुए पहुंचे, वहां के मन्दिरों में स्थित शास्त्र-भण्डारों को खुलात और लोगों को शास्त्र-स्वाध्याय के लिए प्रेरित करते। इस विहार-काल में उन्हें स्थान-स्थान पर नये नये ग्रन्थ दृष्टिगोचर होने लगे, साथ ही उनकी अव्यवस्था भी दिखाई दी कि कहीं अनेक ग्रन्थ दीमकों और मूषकों के भक्ष्य हो गये तो कितने ही सील आदि से गल गये हैं, कितने ही वेष्टन-बन्धनादि की शिथिलता से खंडित हो गये हैं। इस प्रकार की अव्यवस्था देख कर उनको बड़ा दुःख हुआ और बार-बार यह विचार मन में आने लगा कि यदि जैनधर्म की इस मूल्य निधि की समुचित रक्षा नहीं की जायगी तो जैन शास्त्रों के इस विशाल भण्डार का बहुत शीघ्र विनाश हो जायगा। इन विचारों से उन्हें सरस्वती भवन की स्थापना की प्रेरणा मिली और फलस्वरूप उन्होंने सर्व प्रथम झालरापाटन में वि० सं० १९७१ के ज्येष्ठ सुदी ५ को श्रुतपंचमी के पवित्र दिन सरस्वती भवन की स्थापना की। वे विहार करते हुए जिस किसी भी ग्राम और नगर में जो नवीन ग्रन्थ देखते, उसे वहाँ के लोगों की अनुमति लेकर पाटन-भवन में भिजवा देते। अनेकों गृहस्थों के घरों से दुर्दशा-ग्रस्त शास्त्रों को मांग-मांग कर उन्होंने भवन को भिजवाया। कितने ही शास्त्र जो उन्हें अपूर्व ज्ञात हुए, और उनके स्वामियों ने देना स्वीकार नहीं किया, तो स्वयं ही उनकी प्रतिलिपि करके भवन को भिजवाये।

जब ऐलक महाराज ने मध्यभारत से दक्षिण भारत में विहार किया, तो वहाँ के शास्त्र भण्डारों से भी अनेकों ग्रन्थ प्राप्त किये और लोगों की प्रेरणा से विक्रम सं० १९७९ की श्रुत पंचमी को बम्बई में दूसरे सरस्वती भवन की स्थापना महाराज ने की। जब महाराज विहार करते हुए ब्यावर आये—जिसे कि वे अपनी जन्मभूमि कहा करते थे—क्योंकि दि० जैनधर्म को आपने यहीं धारण किया था—तो आप को यहाँ भी सरस्वती भवन खोलने की प्रेरणा प्राप्त हुई और फलस्वरूप वि० सं० १९९२ की श्रुत पंचमी को तीसरे भवन की स्थापना की गई।

आपने अपने जीवन काल में उक्त तीनों सरस्वती भवनों की ही स्थापना नहीं की, अपितु उनकी सुचारु व्यवस्था-संचालनार्थ धनी-मानी दानी श्रीमानों को प्रेरणा कर करके हजारों रुपया भी एकत्रित किये। आज भवन के ध्रौव्य फंड में लगभग बारह हजार ग्रन्थ विद्यमान हैं। अकेले ऐलक महाराज ने इतने विशाल शास्त्रों का संग्रह और इतनी विपुल सम्पत्ति का संचय करके जैन सरस्वती की जो अपूर्व सेवा

(शेष पृष्ठ ४० पर)

[पृष्ठ १४ का शेष]

की है, उसकी मिशाल मिलना कठिन है। आपने सरस्वती भवनों के अतिरिक्त अनेकों स्थानों पर पाठ-शालाएं खुलवाईं, औषधालय खुलवाये और दान-शालाएं भी खुलवाईं हैं, जो आज भी सुचारु रूप से चल रही हैं। महाराज के हाथ की लिखी एक बही भवन में मौजूद है, जिसमें कि वि० सं० १९६९ के कार्तिक सुदी १३ गुरुवार को झालरापाटन में एक दानशाला का श्री गणेश होने का उल्लेख है। तथा उसी दिन वहाँ के श्रीमानों ने लगभग तीस हजार का चन्दा एकत्रित किया है, जिसमें ११००१) सेठ विनोदीराम जी बालचन्द्र जी ने दिया है।

इस प्रकार स्व० ऐलक जी महाराज ने अपने जीवन-काल में लोगों से चारों प्रकार के दान कराये। महाराज का स्वर्गवास ब्यावर में ही वि० सं० १९९६ में हुआ। उनकी यादगार में पंचायती नशियां जी में एक सुन्दर संगमरमर की छत्री बनाई गई है। पर उनका सच्चा स्मारक तो यह ऐलक सरस्वती भवन ही है। ●